शेख़ फ़रीद – सबद ६२

फरीदा जिन्ही कमी नाहि गुण ते कमड़े विसारि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा जिन्ही कमी नाहि गुण ते कमड़े विसार ॥
मत सरमिंदा थीवही सांई दै दरबार ॥५९॥

सार: जैसे नदी समुद्र की ओर बहती है, वैसे ही हमारे प्रयास भी गहरे सामंजस्य की ओर प्रवाहित होते हैं। फिर भी, हर प्रयास हमें स्पष्टता की ओर नहीं ले जाता, कुछ तो बस पानी में हलचल मचाते हैं और उसे धुंधला छोड़ जाते हैं। हमारे प्रयास अमूल्य हैं और हम उन्हें किस दिशा में मोड़ते हैं, यही हमारे आंतरिक संसार को आकार देता है। जब हमारे कार्य हमारी चेतना को उन्नत करते हैं तब वह हमें ऐसी लय से जोड़ते हैं जो व्यक्तिगत लाभ से कहीं ऊपर होती है। ऐसे कार्यों को चुनकर जो बिखराव के बजाय स्पष्टता लाते हैं, हम ऐसे सामंजस्य के मार्ग पर अग्रसर होते हैं जो स्वयं और समग्र, दोनों को गले लगा लेता है।

फरीदा जिन्ही कमी नाहि गुण ते कमड़े विसारि ॥
फ़रीद कहते हैं कि जिन कामों में कोई भलाई नहीं होती, जैसे कि छोटी-मोटी बातें उन्हें त्याग देना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें उन कामों में अपनी मेहनत लगानी चाहिए जो हमें ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद करते हैं और आंतरिक स्पष्टता देते हैं।

मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥५९॥
ताकि उस सर्वव्यापक साक्षी, हमारी अंतरात्मा के सामने हमें लज्जित न होना पड़े। यह उस परम सत्य की अवस्था का प्रतीक है, जहाँ हम अपने निर्णय और कर्मों का आत्मनिरीक्षण बिना किसी भ्रम या पक्षपात के कर सकते हैं। (५८)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद कहते हैं कि परम सत्य पसंद या डर से अछूता रहता है। जब हमारा ध्यान इस वास्तविकता पर होता है, तब आत्म-निरीक्षण स्पष्ट और आडंबर-रहित हो जाता है। हम अपने चुनावों को किसी भी तरह के तर्क या इनकार की धुंध के बिना देख सकते हैं। भ्रम की पकड़ ढीली पड़ जाती है क्योंकि किसी भी चीज़ का बचाव करने या उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताने की ज़रूरत नहीं रहती। इस स्थिरता में, यहाँ तक कि असहज लगने वाली अनुभूतियाँ भी डरावनी लगने के बजाय शिक्षाप्रद प्रतीत होती हैं। इस ठोस आधार से, विवेक स्वाभाविक रूप से जागृत होता है जो हमारी क्रियाओं को अडिग निष्ठा के साथ दिशा प्रदान करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com